International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 25-03-2019; Accepted: 27-04-2019
www.socialsciencejournal.in
Volume 5; Issue 3; May 2019; Page No. 233-235

मधुबनी जिला में जनसंख्या की गत्यात्मकता

डॉ0 राजेश्वर राय
राजकीय उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय, पटना शहर, पटना, बिहार, भारत।

सारशं
कसी भी प्रदेश की जनसंख्या वृद्धि, उसके आर्थिक विकास स्तर, सामाजिक स्तर, सामाजिक जागरूकता, संस्कृतिक आधार एवं ऐतिहासिक घटनाक्रम पर आधारित होती है। जनसंख्या की गत्यात्मकता का तात्पर्य क्षेत्र विशेष में एक निश्चित अवधि में निवास करने वाले लोगों की संख्या में परिवर्त्तन से लगया जाता है तथा परिवर्तन से भविष्य में होने वाली प्रभाव को देखा जाता है। वास्तव में जनसंख्या वृद्धि उच्च जन्मदर और निम्न मृत्युदर तथा प्रवजन की उपेक्षा अधिक आव्रजन जैसे जनांकिकीय तथ्यों पर निर्भर करता है। प्रस्तुत शोध में उक्त दृष्टि से जनसंख्या गत्यात्मकता का जिला में अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्द : जनसंख्या, गत्यात्मकत्ता, प्रक्षेप, प्रवास, जनगणना आदि।

प्रस्तावना
प्रस्तुत शोध प्रपत्र मधुबनी जिला में विगत 110 वर्षो (1901–2011) में हुई जनसंख्या के वृद्धि के आलोक में आगामी वर्षो में होने वाली जनसंख्या वृद्धि की भविष्यवाणी पर आधारित है।

अध्ययन का उद्धेश्य
प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्धेश्य शोध जिला मधुबनी में जनसंख्या की गत्यात्मकता का अध्ययन करना तथा प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर जनसंख्या नियोजन का प्रारूप प्रस्तुत करना।

अध्ययन का विधि तंत्र
प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषणात्मक विधितंत्र का प्रयोग किया गया है जिसमें मधुबनी जिले में 1901 ई0 2011 से ई0 तक के मध्य हुई जनगणना से प्राप्त आकड़ों को एकत्रित कर दशकीय वृद्धि की प्रवृतियों का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र
वर्तमान मधुबनी जिला 3501 वर्ग किलोमिटर के क्षेत्रफल में 26°7' उत्तरी अक्षांश से 26°40' उत्तरी अक्षांश तक तथा 85°21' प0 देशान्तर से 86°45' पूर्वी देशान्तर के बीच अवस्थित है। यह जिला नेपाल देश के अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर अवस्थित है। इसके उत्तर में नेपाल, दक्षिण में दरभंगा जिला एवं सहरसा जिला तथा पश्चिम में सीतामढ़ी जिला अवस्थित है।

तलिका 1: मधुबनी जिला में जनसंख्या वृद्धि (1901–2011)

वर्ष	जनसंख्या (लाख में)	वृद्धि	प्रतिशत वृद्धि	वार्षिक वृद्धि
1901	1026843	–		
1911	1032937	6094	0.59	0.059
1921	1027256	–5681	–0.55	–0.055
1931	1124774	97518	8.87	0.887
1941	1238601	113827	9.19	0.919
1951	1361699	123098	9.04	0.904
1961	1601048	239349	17.57	1.76
1971	1892039	290991	18.18	1.81
1981	2325844	433805	22.93	2.29
1991	2832024	506180	21.76	2.17
2001	3575281	743257	26.24	2.62
2011	4487379	912098	25.51	2.55

स्त्रोतः (भारतीय जनगणना निदेशालय, पटना एवं दरभंगा जिला के गजेटियर)

विश्लेषण एवं व्याख्या
मधुबनी जिला में जनसंख्या वृद्धि में प्राकृतिक वृद्धि का विशेष योगदान रहा है। 1901 में 1026843 जनसंख्या थी जो 2011 में बढ़कर 4487379 हो गयी है। जबकि बिहार राज्य की कुल जनसंख्या 104099452 है जो 97163 वर्ग किलोमिटर क्षेत्रफल पर निवास करती है। मधुबनी जिला का क्षेत्रफल प्रदेश के क्षेत्रफल का मात्र 3.72 प्रतिशत है। जबकि जनसंख्या 4.31 प्रतिशत हैं आजादी के बाद स्वास्थ्य सेवा में सुधार, महामारी पर नियंत्रण, शिक्षा के स्तर में सुधार आदि के कारण जन्मदर और मृत्युदर में पर्याप्त अन्तर आया है। प्रारंभिक दशक (1901–11) जनसंख्या में ऋणात्मक वृद्धि देखा गया है। 1911.1921 में समग्र जनसंख्या में 0.055 प्रतिशत की वृद्धि उल्लेखित हुई है। जो दुर्भिक्ष एवं

महामारी के कारण हुई है। 1921–1931 में 0.87 प्रतिशत की वृद्धि उल्लेखित हुई है। इसे निम्न तालिका से समझा जा सकता है–

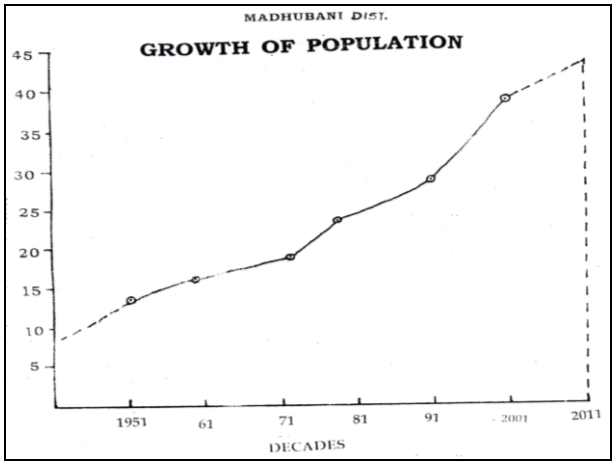

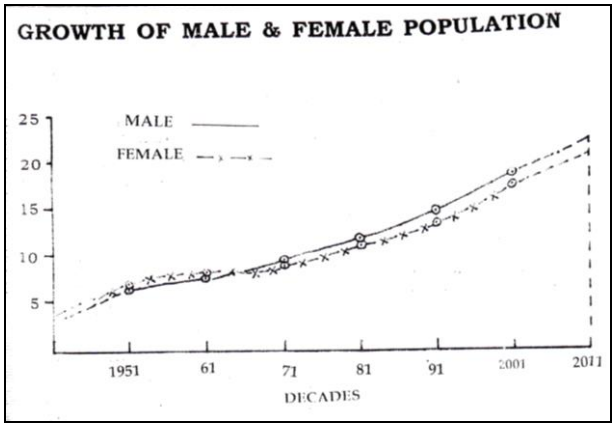

दशकीय वृद्धि (प्राक्–स्वतंत्रताकाल): प्राक् स्वतंत्रताकाल में शोध जिला में जनसंख्या वृद्धि में प्राकृतिक वृद्धि का विशेष योगदान रहा है। 1901–1911 में जनसंख्या वृद्धि देखी गई है। लेकिन दूसरे दशक 1911–1921 के बीच समग्र जनसंख्या में 0.055 प्रतिशत की ऋणात्मक वृद्धि हुई है। अकाल एवं महामारी के कारण जनसंख्या वृद्धि की ऋणात्मक प्रवृति देखी गयी है। राय, पी0 सी0 चौधरी (1960) के अनुसार इसका महामारी (प्लेग) की संक्रमकता में आयी कमी से अधिक प्रभावशाली प्रवासी पुरूषों की संख्या में की कमी थी क्योंकि इस दशक में स्त्रियों की संख्या में कमी तथा पुरूषों की संख्या में की वृद्धि अंकित की गयी है। 1921–1931 के दशक में हैजा एवं प्लेग के प्रकोप को छोड़ जन–स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी संतोषजनक रहा। फलतः इस दशक में जनसंख्या की दृष्टि से सामान्य रहा। इस दशक में वृद्धि पर 8.87 प्रतिशत अंकित की गयी। 1931–1941 का दशक में जनसंख्या की 9.19 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि की गयी है। 1941–1951 का दशक में फिर एक बार जनसंख्या महामारियों का शिकार हुआ है। अंतिम तीन वर्षों को छोड़कर लगभग पूरा दशक इन घातक महामारियों का तांडव जिलावासी भोगता रहा। फलस्वरूप जनसंख्या वृद्धि की दर एक बार भी ह्रासोन्मुख हो गया। कुल मिलाकर 1921 के उपरांत प्राक्–स्वतंत्रता अवधि में जनसंख्या की वृद्धि मंद एवं उतार–चढ़ाव से युक्त थी। तालिका 2 से स्त्री–पुरूष अनुपात में अन्तर दृष्टिगोचर होता है। 1931–41 एवं 1941–51 को छोड़कर पूर्व के शेष सभी दशकों में पुरूषों की जनसंख्या वृद्धि का दर स्त्रियों की तुलना में अग्रगामी थी। 1911–21 के दशक में स्त्रियों के संख्या वल में ही घातक महामारियों के कारण ह्रास परिकलित हुआ।

दशकीय वृद्धि (स्वातंत्रोत्तर काल)

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त जनसंख्या की तीव्र वृद्धि की उर्ध्वगामी प्रवृति 2011 तक बनी रही। सभी दशकों मे जनसंख्या की वृद्धि तीव्रतर होती गयी। इसका श्रेय जीवन–रक्षक चमत्कारिक औषधियों तथा जीवन–स्तर में उत्थान को जाता है जिसके फलस्वरूप जन्मदर यथावत् रहते हुए मृत्यु दर नियंत्रित हो पाया है। इस जनांकिकीय विस्फोट के पीछे संक्रामक महामारियों पर नियंत्रण के अतिरिक्त कृषि क्रांति और औधोगिक क्रांति से प्राप्त आर्थिक समृद्धि का भी विशेष योगदान है। समृद्धि के बीच अदम्य मानवीय यौन प्रवृतियों तथा साथ ही साथ संतान प्राप्ति की उत्कट् इच्छाओं ने इस विस्फोट में उत्तेजक का कार्य किया है। 1991–2001 के बीच जनसंख्या वृद्धि का दर 26.24 प्रतिशत परिकलित की गयी है जो परिवार नियोजन या परिवार कल्याण मंत्रालय के विफलताओं का एक अकाट्य प्रमाण है। संभवतः परिवार कल्याण के उपाय समाज के सभी वर्गों में समान रूप से स्वीकार्य नहीं है। अनुभव से हमें यह ज्ञात होता है कि जनसंख्या वृद्धि का दर शिक्षितों की अपेक्षा अशिक्षितों में अगड़ी जातियों की अपेक्षा गरीब पिछड़ी जातियों में एवं हिन्दुओं की मुसलमानों में तीव्रतर है।

तालिका 2: स्वातत्रयोन्तर अवधि में जनसंख्या वृद्धि (1951–2011)

जनगणना वर्ष	पुरूष	स्त्री	कुल जनसंख्या
1951	659900	701799	1361699
1961	778653	822395	1601048
1971	950417	941622	1892039
1981	1173383	1152461	2325844
1991	1465997	1366027	2832024
2001	1840997	1734284	3575281
2011	2329313	2159066	4487379

स्त्रोतः भारतीय जनसंख्या निदेशालय, पटना।

तालिका 3: मधुबनी जिला में पुरूष एवं स्त्री का जनसंख्या वृद्धि (प्रतिशत में) (1951–2011)

जनगणना वर्ष	पुरूष	स्त्री	सम्पूर्ण
1951	16.03	15.1	9.04
1961	18.0	17.18	17.58
1971	22.06	14.50	18.18
1981	23.46	22.39	22.93
1991	24.94	18.53	21.76
2001	25.58	26.96	26.24
2011	26.52	24.44	25.51

स्त्रोतः (भारतीय जनगणना निदेशालय, पटना)

स्वतंत्रोन्तर अवधि में जनसंख्या वृद्धि में स्त्री–पुरूषों के अन्तर

तालिका–3 से स्पष्ट है कि 1941–51 एवं 1951–61 के दशकों में पुरूषों की जनसंख्या वृद्धि का दर क्रमशः जहाँ 16.03 एवं 18. 0 प्रतिशत था जबकि स्त्रियों में क्रमशः 15.1 एवं 17.18 प्रतिशत परिकलित हुआ। 1961–1971 एवं 1971–1981 में जहाँ पुरूषों का प्रतिशत क्रमशः 22.06 एवं 23.46 प्रतिशत था। वहीं स्त्रियों की संख्या में वृद्धि क्रमशः 14.50 तथा 22.39 प्रतिशत था। 1981–1991 तथा 1991–2001 तथा 2001–2011 के बीच पुरूषों में जनसंख्या वृद्धि क्रमशः 24.94 प्रतिशत, 25.58 प्रतिशत तथा 26. 52 प्रतिशत था वही दूसरी ओर महिलाओं में वृद्धि का प्रतिशत क्रमशः 18.53 प्रतिशत, 26.96 प्रतिशत तथा 29.44 प्रतिशत होता गया।

जनसंख्या वृद्धि के उपरोक्त पुरूष स्त्री अनुपात में अन्तर से स्पष्ट है कि हरित क्राति के फलस्वरूप कृषिय प्रगति के कारण मधुबनी जिला में जीविकोपार्जन के अवसर बढ़े है। फलस्वरूप

आजीविका अर्जन हेतु प्रवासी होने वाले पुरूष कर्मियों एवं गरीब किसानों के यहाँ से स्थानान्तरण ह्रासोन्मुख हुआ जबकि इसके पूर्व शोध जिला से जनसंख्या का स्थाान्तरण एक बड़ी संख्या में हुआ करता था इसमें सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का भी विशेष योगदान है जिससे प्रवास की प्रवृति में कमी देखी गयी है। 1901 से प्रारम्भ अन्तर्दशकीय जनसंख्या वृद्धि के अनुसार (आधार वर्ष 2011) 2051 तक के लिए गए प्रक्षेपण से कम से कम इतना निश्चित हो गया है कि प्रति व्यक्ति भूमि (भौगोलिक या कृपित) भविष्य में इतनी संकुचित हो जायेगी कि संसाधन के रूप में जीविकोपार्जन हेतु इसका संज्ञान नहीं हो पायेगा। इसके परिणामस्वरूप स्थानीय संसाधन आवश्यकता से इतने कम हो जायेंगे कि प्रवास के अतिरिक्त अस्तित्व की की रक्षा के लिए कोई भी सुरक्षित उपाय बचा नहीं रहेगा। यद्धपि मधुबनी जिला का मैदानी भाग अभी तक सामाजिक–आर्थिक समस्याओं के समाधान की दिशा में हदतक सुखद सिद्ध हुई है लेकिन अच्छी अर्थव्यवस्था के लिए शकुनदायी विकल्प नहीं है।

संदर्भ सूची

1. हीरा लाल (1993), जनसंख्या वसुन्धरा प्रकाशन।
2. आर0 सी0 चन्दना (2003) जनसंख्या भूगोल, कल्याणनी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. सेन्सस ऑफ इण्डिया, 2001 एवं 2011
4. चौधरी, पी0 सी0 राय (1960), मधुबनी जिला का गजेटियर।
5. सिंह, आर0 एल0 (1980), रूरल, सेट्लमेन्ट इन मौनसून इण्डिया (छळ57) वाराणसी
6. Kikngskay] Deris (1949) “The population of India” Vol I fior dasad
7. सिंह काशीनाथ (1962) रूरल मार्केट एण्ड अरबन सेन्टर्स इन इस्टर्न यू0 पी0, एच0 डी0 थेसिस, बी0 एच0 यू0)
8. सिंह राजेश (2002), भारत का भूगोल, भुसेन्ट पब्लिकेशन, नई दिल्ली।